कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 76 कानपुर, रविवार 15 सितम्बर 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

हिंदी में पत्राचार की संख्या में हुई भारी वृद्धि : कुलपति

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा

है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो, शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

के लाले पड़ चुके है ग्रामीणो ने शासन से पीड़ित परिवार को मदद की गुहार लगाई है।

व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजभाषा..कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह

दि ग्राम टुडे, कानपुर।(संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि मा. प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो,शिक्षकों,वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजभाषाः कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि मा. प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो,शिक्षकों,वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

अंक-257 रविवार,15 सितंबर 2024 लखनऊ व एटा से प्रकशित R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4 मूल्य-

व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण

राजभाषा–कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह

रहस्य संदेश ब्यूरो

कानपुर - चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार

सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि मा. प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो,शिक्षकों,वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

मौसम
अधिकतम तापमान
33 .c
27 .c
न्यूनतम तापमान
बाजार
सोना 73.840g
चांदी 87.000 kg
सेंसेक्स
81,053.19

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

यूपी मैसेंजर

जनता की आवाज

04 राजनीतिक लाभ के लिए संकट को निमंत्रण, मुफ्त रेवड़ियों पर भारत को रहना होगा अलर्ट

फिर से अभिनय करना चाहती

वर्ष :10 अंक :223 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ ,रविवार 15 सितम्बर 2024 पृष्ठ : 08

हिंदी में पत्राचार की संख्या में हुई भारी वृद्धिः कुलपति

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर, सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है।

क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था।

विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है।

कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है।

जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए।

कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो, शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

लाल पान की बेगम से चटख हुआ हिंदी का रंग

हिंदी दिवस पर छात्राओं ने फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी का किया मनमोहक मंचन

जासं, कानपुर : हिंदी दिवस पर शनिवार को एसएन सेन बालिका विद्यालय पीजी कालेज की छात्राओं ने हिंदी के प्रख्यात कहानीकार फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी लाल पान की बेगम का मनमोहक मंचन कर हिंदी भाषा की संप्रेषणीयता और समृद्धि का अहसास कराया। साहित्यकार व हिंदी विभाग डीएवी कालेज की पूर्व अध्यक्ष डा. दया दीक्षित ने हिंदी की लोकप्रियता के कारणों का उल्लेख किया।

कार्यक्रम का आयोजन कालेज के हिंदी विभाग की छात्राओं की ओर से किया गया। लाल पान की बेगम का मंचन भी विभाग की छात्राओं ने किया। प्राचार्य प्रो. सुमन, प्रबंध तंत्र समिति के अध्यक्ष प्रवीण कुमार मिश्रा सचिव प्रोबीर कुमार सेन, शुभ्रो सेन व शिक्षिकाओं ने कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रतिभागी छात्राओं को पुरस्कृत भी किया गया। कार्यक्रम का संयोजन हिंदी विभागाध्यक्ष डा. शुभा बाजपेई व संचालन डा. रेशमा ने किया।

एसएनसेन कालेज में हिंदी दिवस पर आयोजित नाटक का मंचन करतीं छात्राएं ● जागरण

छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय के स्कूल आफ लैंग्वेजेज़ में हिंदी: कल, आज और कल विषय पर आयोजित गोष्ठी में निदेशक डा. सर्वेशमणि त्रिपाठी ने हिंदी को हमारी सोच और स्वप्न की भाषा बताया। वक्ताओं में डा. सोनाली, डा. सुमना विश्वास, डा. विकास कुमार यादव शामिल रहे।

वीएसएसडी कालेज के विधि विभाग की ओर से आयोजित अन्तर महाविद्यालयीन निबन्ध प्रतियोगिता में कालेज के 42, बीएनडी कालेज के सात, चौधरी राम गोपाल विधि महाविद्यालय के छह और जीपीआरडी विधि महाविद्यालय के सात प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। प्राचार्य प्रोफेसर बिपिन चन्द्र कौशिक ने कहा कि विधिक जागरुकता के लिए विधि का स्वः भाषा में ज्ञान होना आवश्यक है। विधि विभागाध्यक्ष प्रोफेसर एबी जायसवाल, आरसी धीमान, राजेश कुमार विश्वकर्मा, अमृता वर्मा ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किया।

एचबीटीयू के खाद्य प्रौद्योगिकी विभाग की ओर से हिंदी दिवस एवं अभियंता दिवस का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. डा. विवेक कुमार, बी.टेक. छात्रा आस्था पांडेय ने खाद्य प्रौद्योगिकी एवं अभियंत्रण में हिंदी भाषा की उपयोगिता की चर्चा की। डा. अनुराग सिंह, विपुल कुमार, विकास यादव, आयशा रहमान, आयुष गौतम, शिवम भास्कर, प्रांशु शर्मा, ऋषभ मिश्रा मौजूद रहे।

भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को) मुख्यालय में हिंदी दिवस कार्यक्रम और हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक प्रवीण कुमार ने किया। उन्होंने कहा हिंदी भाषा हमारे देश की विविधता मे एकता और संस्कृति को पिरोती है। हमें आमतौर पर अपनी बातचीत में अंग्रेजी भाषा से बचना चाहिए। हिंदी भाषा के शब्दों का ही प्रयोग करना चाहिए। इस अवसर पर निगम के महाप्रबंधक (वित्त एवं प्रशासन) अतुल रूस्तगी, महाप्रबंधक [illegible] अजय चौधरी, महाप्रबंधक व इंचार्ज (उत्पादन) विवेक द्विवेदी मौजूद रहे।

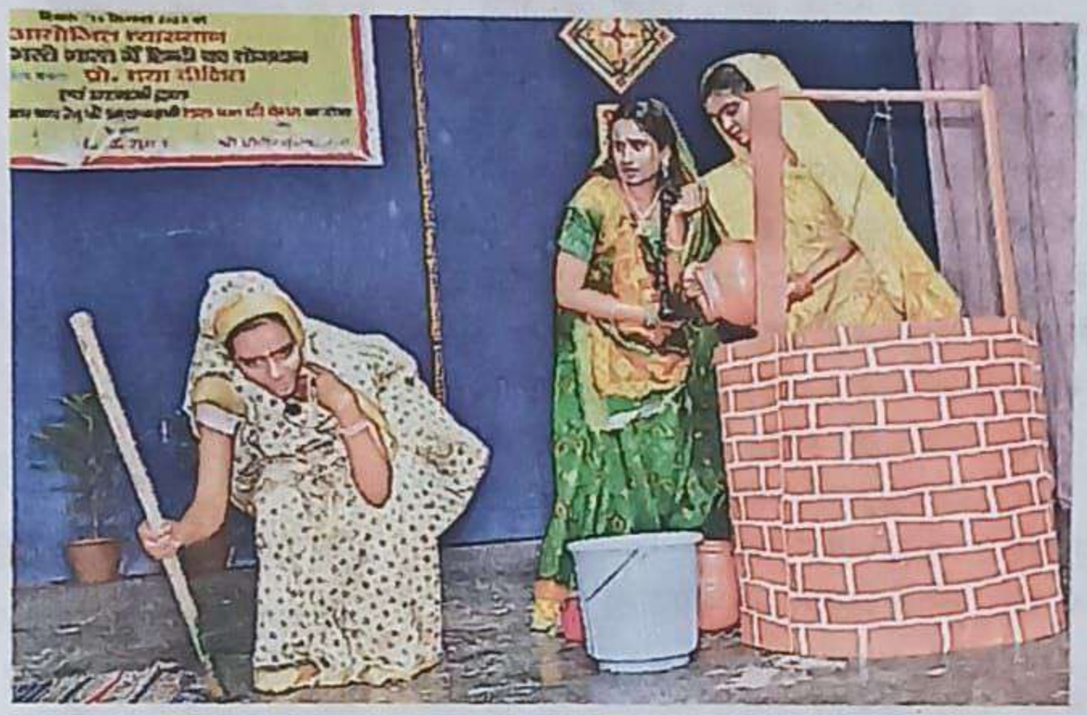

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आनंद सिंह ने हिंदी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में हिंदी की महत्ता की चर्चा की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कामकाज कराया जा रहा है। हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है।

अटक

नेटफ्लिक्स पर
स्पिन–आफ
आई थी। जी5 पर
जासूसी थ्रिलर फिल
बस नाम उससे मिल
बिल्कुल अलग है।
फिल्म की शुरुआ
दिल्ली में आकाशव
खबर के साथ होती
के राष्ट्रपति भारत
वाले हैं। मूक–ब
स्कूल में पढ़ाने वाले
(सांकेतिक भाषा) कि
वर्मा (अपारशक्ति
अचानक एक पत्र
सकी छुट्टी मंजूर
दरअसल, उसे भारत
ब्यूरो द्वारा अशोक कुम
सिंह) पूछताछ के
जाता जिस पर
देश खुफिया एजें
का है। वह मू
और केवल साइन
समझ सकता है। ब्यू

हिंदुस्तान 14/09/2024

... सचिव शुभ्रा सेन,
दीप... प्रव... बाजपेयी रहीं।

सीएसए: व्यक्तित्व निर्माण में हिंदी सहायक

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉ. आनंद सिंह ने हिंदी दिवस पर कहा कि यह दिन हिंदी की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में बच्चे तीव्र गति से सीखते हैं। व्यक्तित्व विकास में इसकी भूमिका अहम है।

दीनार टाइम्स

कानपुर न्यूज

व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजभाषा

डीटीएनएन कानपुर।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि प्रधानमंत्री ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है। जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो, शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

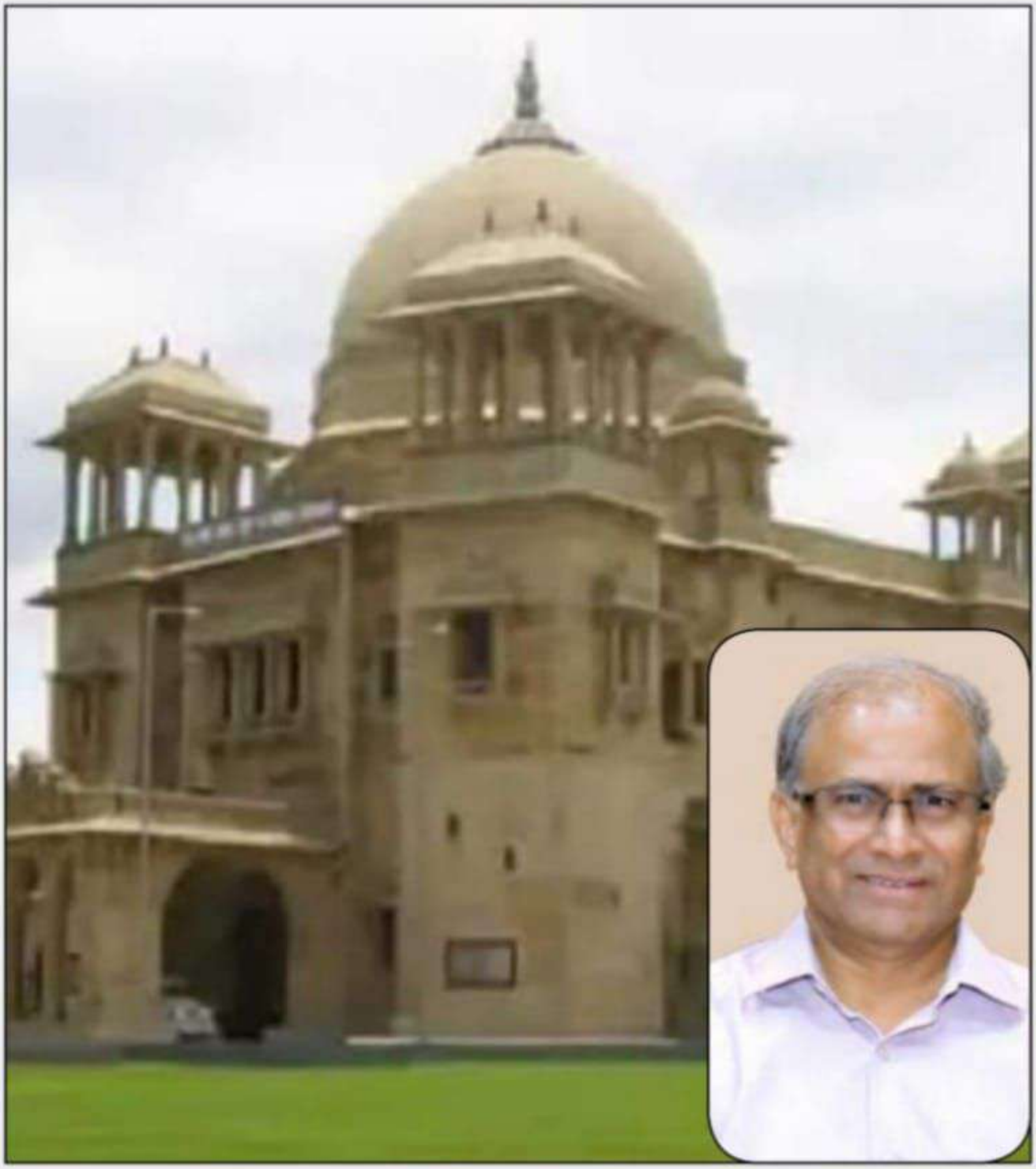

31.0°
अधिकतम
24.0°
न्यूनतम
www.twitter.com/worldkhabarexpress
www.facebook.com/worldkhabarexpress
www.youtube.com/worldkhabarexpress
WORLD
खबरें एक्सप्रेस
www.worldkhabarexpress.media | www.worldkhabarexpress.com | Daily Evening E-Paper

व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजभाषाः कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद सिंह ने हिंदी दिवस के अवसर पर कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ सिंह ने बताया कि इस दिन को महत्व के साथ याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजों से आजाद होने के बाद यह देश वासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनंद कुमार सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथ साथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पोर्टल पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। कुलपति ने कहा कि मा. प्रधानमंत्री जी ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने में आसानी होगी। उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा है और मनुष्य किसी अन्य भाषा की अपेक्षा अपनी मातृभाषा में तीव्र गति से सीखता है। उन्होंने कहा कि विश्व में अनेक विकसित देशों में मातृभाषा में ही शिक्षा दी जाती है। जापान इसका प्रमुख उदाहरण है।

जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा एवं कामकाज

कर सकते हैं। हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। कुलपति डॉ सिंह ने कहा कि हिंदी भारत की विभिन्न औपचारिक भाषाओं में एक है।हिंदी दिवस के अवसर पर कुलपति ने विश्व विद्यालय परिवार के सभी अधिकारियो,शिक्षकों,वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र छात्राओं को शुभकामनाएं दी ।

राष्ट्रीय सहारा

राष्ट्रीयता ■ कर्त्तव्य ■ समर्पण

नगर संस्करण

व्यक्तित्व निर्माण में राजभाषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण'

ुर (एसएनबी)। व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजभाषा ; बात शनिवार को हिन्दी दिवस के अवसर पर चंद्रशेखर आजाद कृषि द्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. आनंद कुमार सिंह ने कही। कहा कि देशभर में 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता होंने कहा कि यह दिन हिंदी मात्र भाषा की महत्वता और उसकी नितांत आवश्यकता को याद दिलाता है। उन्होंने कहा कि सन 1949 में 14 सितंबर के दिन ही हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिला था। जिसके बाद से अब तक हर वर्ष यह दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

ति के कुलपति आनंद

1949 में 14 तंबर को हिन्दी मिला था राज भाषा का दर्जा

डॉ. सिंह ने बताया कि इस दिन के महत्व को याद करना इसलिए जरूरी है। क्योंकि अंग्रेजो से आजाद होने के बाद यह देशवासियों की स्वाधीनता की भी एक निशानी है। उन्होंने कहा कि पहला हिंदी दिवस 14 सितंबर 1953 को मनाया गया था। डॉ. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के साथसाथ हिंदी में भी कार्य ने गति पकड़ी है। विभिन्न प्रकाशन में अंग्रेजी के साथसाथ हिंदी का भी काफी प्रयोग हो रहा है। साथ ही हिंदी में पत्राचार की संख्या में वृद्धि हुई है।

न्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की वेबसाइट एवं कृषि विज्ञान केंद्रों के पर भी हिंदी में जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है। उन्होंने कहा कि त्री मोदी ने भी नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत प्रारंभिक शिक्षा षा में दिए जाने की बात कही है। जिससे छात्रों को विषय वस्तु समझने सानी होगी। उन्होंने कहा कि जब अन्य देश अपनी मातृभाषा में शिक्षा ामकाज कर सकते हैं तो हमें अपनी दैनिक कामकाज में हिंदी का से अधिक प्रयोग करना चाहिए। उन्होंने इस मौके पर विश्वविद्यालय के सभी अधिकारियों, शिक्षकों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों एवं छात्र-ों को शुभकामनाएं दी ।

'विधिक जागरुकता के लिये कानूनों का स्वभाषा में ज्ञान होना आवश्यक'

कानपुर (एसएनबी)। वीएसएसडी कॉलेज के विधि विभाग के तत्वावधान में हिन्दी दिवस के मौके पर अन्तर महाविद्यालयी निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न विद्यालयों के छात्रछात्राओं ने प्रतिभाग किया। इस मौके पर प्राचार्य प्रो. विपिन चन्द्र कौशिक ने प्रतिभागियों को बताया कि विधिक जागरूकता के लिये विधि का स्वभाषा में ज्ञान होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि भारत में हिन्दी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। इसलिये विधि का ज्ञान एवं न्यायलय की प्रक्रिया हिन्दी में होना आवश्यक है।

विधि विभागाध्यक्ष प्रो.एवी जायसवाल ने आने वाले सभी अतिथियों का एवं प्राचार्य का स्वागत किया। आरसी धीमान ने प्रतियोगिता से सम्बन्धित आख्या रिपोर्ट प्रस्तुत की एवं राजेश कुमार विश्वकर्मा ने अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन व कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों को प्राचार्य प्रो.विपिन चन्द्र कौशिक, प्रो.एवी. जायसवाल, आरसी धीमान ने प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किया।

हिन्दी दिवस पर विशिष्ट जनों का किया सम्मान

केडीएमए वर्ल्ड स्कूल में कानपुर स्कूल्स वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा हिंदी दिवस पर गुरुजनों को सम्मानित करते पदाधिकारी।

कानपुर (एसएनबी)। स्कूल्स वेलफेयर एसोसिएशन ने शनिवार को केशवपुरम स्थित केडीएमए वर्ल्ड स्कूल में हिंदी दिवस पर 'गुरुजन सम्मान' समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ विशिष्टअतिथि अवकाश प्राप्त जिला विद्यालय निरीक्षक विजय पाल जैन एवं साहित्यकार चंद्र प्रकाश गुप्त ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इसके पश्चात छात्रा आस्था पांडे ने गणेश वंदना नृत्य के साथ कार्यक्रम का प्रस्तुत कर लोगों का मनमोह लिया।

हिंदी दिवस पर डॉक्टर गायत्री सिंह एवं डॉक्टर साधना सिंह ने व्याख्यान में अपने विचार व्यक्त किये। समारोह की प्रथम कड़ी के तहत गुरुजन सम्मान में सर्वप्रथम शिक्षा के क्षेत्र से अपने जीवन काल में अपनी विशेष योग्यता का योगदान, उत्कृष्ट कार्य और सेवा के लिए लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड से अवकाश प्राप्त विभागाध्यक्ष अर्मापुर डॉ. एम.पी. सिंह, डॉ. रमेश चंद्र शर्मा को विशेष अतिथि विजय पाल जैन द्वारा प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह एवं अंग वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया गया।

इस मौके पर कानपुर महानगर के प्रतिष्ठित 14 विद्यालयों के प्रधानाचार्य को भी गुरुजन सम्मान में प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र, प्रतीक चिन्ह से सम्मानित किया गया। इस मौके पर 15 विद्यालयों की 40 शिक्षिकाओं एवं शिक्षकों को भी गुरुजन सम्मान से सम्मानित किया गया। टॉप रैंकर्स संस्था के निर्देशक नीरज कुमार ने संस्था की तरफ से सभी प्रधानाचार्यों और शिक्षिकाओं का सम्मान किया। एयर फोर्स स्कूल की वरिष्ठ शिक्षिका अनामिका द्विवेदी को भी प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। संस्था के महामंत्री पं.कृष्ण कुमार दुबे मुन्ना ने संस्था के संरक्षक, संस्थापक एवं कानपुर क्रिकेट एसोसिएशन चेयरमैन डॉ. संजय कपूर के साथ मिलकर आशा कृष्णा स्कॉलरशिप-2025 को प्रारंभ करने की घोषणा की। कार्यक्रम में डॉ. संजय कपूर, अजित अग्रवाल, प्रतीक श्रीवास्तव, सुधांशु राय, महेंद्र बहादुर सिंह, नीरज श्रीवास्तव, डॉ. रेखा दुबे, धर्मेंद्र सिंह, नीरज कुमार, अंकित दुबे, सुरभि दुबे, मनोज चौरसिया, अनुज पांडे, उपेंद्र यादव, मोनिका पुरी, सौरभ श्रीवास्तव आदि लोग मौजूद रहे।